प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

बुच्चा निवास पर प्रवचन

सामायिक का अर्थ है अपनी आत्मा में अनुष्ठान करना : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 7 जुलाई , 2010

सुगनचन्द पोकरमल बुच्चा निवास पर आयोजित धर्म सभा को संबोधित करते हुए अपने दैनिक प्रवचन में आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि मनुष्य विषय भोगों में आसक्त रहता है, काम भोग का सेवन करते-करते वह एक दिन वह काम भोगने में अक्षम हो जाता है और उसे एक दिन मौत ले जाती है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जो व्यक्ति काम भोग की वस्तुओं को चुनता है, काम भोग की वस्तुओं में आसक्त रहता है उसे एक दिन मौत ले जाती जैसे सोये हुए व्यक्ति को बाढ़ ले जाती है। आसक्ति करने वाला व्यक्ति का भविष्य अच्छा नहीं होता उसका भविष्य धुंधला हो जाता है। अच्छे शुभ भविष्य के लिए अनासक्ति का अभ्यास करना चाहिए।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जैन लोग सामायिक करते हैं, स्वाध्याय करते हैं, सामायिक का अर्थ है अपनी आत्मा में अनुष्ठान करना है। गृहस्थ सामायिक करता है तो वह एक तरह से कुछ समय के लिए साधु बन जाता है। उन्होंने छह कोटी, आठ कोटी और नौ कोटी की सामायिक की व्याख्या करते हुए कहा कि सामायिक करने से कलह से बच जाता है। यदि श्रावक प्रतिदिन सामायिक करता है, स्वाध्याय करता है तो वह पाप कर्मों से बच जाता है पुण्य कर्मों का बंध होता है जिससे उसकी गति अच्छो होती है और वह मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है।

इस अवसर पर ऋतु बुच्चा अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)